2
तुलसीदास
(जन्म : संवत् 1589 / मृत्यु : संवत् 1680)

जीवन परिचय –

तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में संवत् 1589 के लगभग माना जाता है। इनके पिता का नाम आत्माराम था जो एक सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनकी माता का नाम हुलसी था। कहा जाता है कि तुलसीदास अभुक्त मूल नक्षत्र में पैदा हुए थे तथा जन्म लेते ही इनकी अवस्था पाँच वर्ष के बालक के समान थी। मुँह में दाँत भी निकले हुए थे। भय की आशंका के चलते माता–पिता ने इन्हें त्याग दिया तथा मुनिया नामक दासी को दे दिया, जिसने इनका पालन–पोषण किया। इनका बाल्यकाल कष्टपूर्ण बीता। कवितावली में ये लिखते हैंः–

'मातु पिता जग जाय तज्यो, विधिहू न लिख्यो कछु भाल भलाई'

इनके गुरू का नाम नरहरिदास बताया जाता है। इनकी पत्नी रत्नावली विदुषी थी किन्तु किसी कारणवश वैवाहिक जीवन अधिक समय तक न चल सका। इन्होंने गृह त्याग कर दिया तथा घूमते–घूमते अयोध्या पहुँच गए। वहीं पर संवत् 1631 में इन्होंने 'रामचरितमानस' की रचना प्रारम्भ की। बाद में ये काशी आकर रहने लगे। जीवन के अंतिम दिनों में पीड़ा शांति के लिए इन्होंने हनुमान की स्तुति की जो 'हनुमान बाहुक' नाम से प्रसिद्ध है। इनकी मृत्यु के संबंध में निम्नलिखित दोहा प्रसिद्ध है :–

''संवत सोलह सौ असी, असी गंग के तीर
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर।''

इन्होंने राम के अनन्य भक्त के रूप में दास्य भाव अपनाते हुए अनेक काव्यग्रन्थों की रचना की, जिनमें से निम्नलिखित प्राप्त हैंः– रामचरितमानस, विनयपत्रिका, दोहावली, गीतावली, कवितावली, रामाज्ञाप्रश्न, बरवैरामायण, जानकीमंगल, पार्वतीमंगल, रामललानहछू, वैराग्य संदीपनी तथा श्रीकृष्ण गीतावली।

तुलसी आदर्शवादी कवि थे। इन्होंने आदर्श चरित्रों का सृजन कर हमें अपने दैनिक जीवन में उनके अनुकरण का संदेश दिया है। ये अवधी और ब्रज भाषा दोनों के पंडित थे। दोनों भाषाओं का शुद्ध और परिमार्जित रूप इन्होंने अपनाया।

पाठ-परिचय –

लक्ष्मण–परशुराम संवाद रामचरितमानस के बालकाण्ड से उद्धृत है। धनुर्यज्ञ के पश्चात् मुनि परशुराम शिव–धनुष भंग का समाचार पाकर क्रोध में तमतमाते हुए वहाँ आते हैं किन्तु राम की विनयशीलता और विश्वामित्र के समझाने पर राम के शक्ति–परीक्षण के बाद उनका क्रोध शांत होता है। परन्तु इस बीच लक्ष्मण और परशुराम के बीच व्यंग्योक्तियों से

युक्त जो संवाद हुआ उस प्रसंग को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। परशुराम के क्रोध से भरे वचनों का उत्तर लक्ष्मण व्यंग्य वचनों से देते हैं। लक्ष्मण जहाँ विवाद वत्सल हैं, वहीं श्रीराम नीतिज्ञ एवं सौजन्य के प्रतिमान के रूप में प्रकट होते हैं। विश्वामित्र सन्तुलन बिन्दु हैं। वे चरमक्रोध की दशा में परशुराम के आवेश को प्रशमित करते हैं। परशुराम का क्रोध, भय से अधिक हास्य का आलंबन बन गया है।

लक्ष्मण-परशुराम संवाद

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने।।
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहूँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू।।

रे नृप बालक काल बस, बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु, बिदित सकल संसार।।

लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।

मातु पितहि जनि सोचबस, करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन, परसु मोर अति घोर।

बिहसि लखनु बोले मृदुबानी। अहो मुनीसु महा भटमानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि डरि जाहीं।।

देखि कुठारू सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी।।
सुर महिसुर हरिजन अरू गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।।
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहूँ पा परिअ तुम्हारें।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।

जो बिलोकि अनुचित कहेउँ, छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गभीर।।

कौसिक सुनहु मंद यहु बालकु। कुटिल काल बस निजकुल घालकु।।
भानु बंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुस अबुध असंकू।।
काल कवलु होइहि छन माहीं। कहऊँ पुकारि खोरि मोहि नाहीं।।
तुम्ह हटकहु जौं चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा।।
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा।।
अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी।।
नहिं संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।।
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा।।

सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु।
बिद्यमान रन पाइ रिपु, कायर कथहिं प्रतापु।।

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार–बार मोहि लागि बोलावा।।
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेऊ कर घोरा।।
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू।।
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब यहु मरनिहार भा साँचा।।
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू।।
खर कुठार मैं अकरून कोही। आगें अपराधी गुरूद्रोही।।
उतर देत छोड़उँ बिनु मारें। केवल कौसिक सील तुम्हारें।।
न त एहि काटि कुठार कठोरें। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें।।

गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि, मुनिहि हरिअरइ सूझ।
अयमय खाँड न ऊखमय, अजहुँ न बूझ अबूझ।।

कहेउ लखन मुनि सील तुम्हारा। को नहिं जान बिदित संसारा।।
माता पितहि उरिन भए नीकें। गुरू रिनु रहा सोचु बड़ जीकें।।
सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ा।।
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली।।
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।।
भृगुबर परसु देखावहु मोही। बिप्र बिचारि बचउँ नृपद्रोही।।

मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े। द्विज देवता घरहि के बाढ़े।।
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। रघुपति सयनहिं लखनु नेवारे।।

लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु।।

कठिन शब्दार्थ

भंजनिहारा	–	तोड़ने वाला	**रिसाइ**	–	गुस्सा करना
रिपु	–	दुश्मन	**बिलगाउ**	–	अलग होना
अवमाने	–	अपमान करना	**लरिकाई**	–	बचपन
परसु	–	फरसा	**कोही**	–	क्रोधी
महिदेव	–	ब्राह्मण	**बिलोक**	–	देखकर
अर्भक	–	बालक	**महाभट**	–	महान योद्धा
मही	–	पृथ्वी	**कुठारू**	–	कुल्हाड़ी
कुम्हड़बतिया	–	छोटा कच्चा फल	**तरजनी**	–	अँगूठे के पास वाली अँगुली
कुलिस	–	कठोर	**सरोष**	–	गुस्से से
कौसिक	–	विश्वामित्र	**भानुबंस**	–	सूर्यवंश
निरंकुस	–	मनमानी करने वाला	**असंकू**	–	शंकारहित
घालकू	–	नाश करने वाला	**कालकवलु**	–	मृत
अबुधु	–	नासमझ	**खोरि**	–	दोष
हटकह	–	मना करने पर	**अछोभा**	–	शांत
बधजोगू	–	मार देने योग्य	**अकरुन**	–	जिसमें करुणा न हो
गाधिसूनु	–	गाधि के पुत्र अर्थात् विश्वामित्र			
अयमय	–	लोहे का बना हुआ	**नेवारे**	–	मना करना
ऊखमय	–	गन्ने से बना हुआ	**कृसानु**	–	अग्नि

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'भृगुसुत से तात्पर्य है –
   (क) परशुराम (ख) विश्वामित्र (ग) लक्ष्मण (घ) राम
2. 'रघुकुल भानु' संज्ञा किस पात्र के लिए आया है?
   (क) राम (ख) लक्ष्मण (ग) विश्वामित्र (घ) परशुराम

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. शिव धनुष भंग होने पर कौन कुपित हुआ?
4. प्रसंग में 'गाधिसूनु' किसके लिए प्रयोग किया गया है?
5. परशुराम लक्ष्मण को मंदबुद्धि क्यों कह रहे हैं?
6. जनक दरबार में बैठी सभा 'हाय हाय' क्यों करने लगी?

लघूत्तरात्मक –

7. शिव धनुष भंग होने पर परशुराम क्यों कुपित हो रहे थे?
8. शिव का धनुष कैसे टूट गया था?
9. "इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं" पंक्ति से लक्ष्मण की कौन–सी विशेषता का पता चलता है?
10. 'लक्ष्मण–परशुराम संवाद प्रसंग' के आधार पर परशुराम के चरित्र की किन्हीं दो विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?

निबंधात्मक –

11. 'लक्ष्मण–परशुराम संवाद' का कथासार अपने शब्दों में लिखिए?
12. 'लक्ष्मण–परशुराम संवाद' की भाषा की विशेषताएँ बताइए।
13. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
    (क) सेवकु सो जो करै सेवकाई............................... न त मारे जैहहिं सब राजा।।
    (ख) बिहसि लखनु बोले मृदुबानी...............................जे तरजनी देखि डरि जाहीं।।
    (ग) सूर समर करनी करहिं .... कायर कथहिं प्रतापु।।
    (घ) कहेउ लखन मुनि सील तुम्हारा .... तुरत देउँ मैं थैली खोली।।